शिक्षा का क्षेत्र
(SCOPE OF EDUCATION)

शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। क्षेत्र से अभिप्राय है—शैक्षिक प्रक्रिया में प्रदान किए जाने वाले अधिगम अनुभवों की विभिन्नता एवं विस्तृतता। इसके अन्तर्गत शिक्षा की विषय सामग्री का अध्ययन किया जाता है। शिक्षा का क्षेत्र वास्तव में उतना ही विशाल है जितना कि यह संसार और इतना दीर्घ है जितना इस पृथ्वी पर मानव का इतिहास। इसके क्षेत्र के अन्तर्गत अग्रलिखित तत्वों को शामिल किया जाता है—

Scanned with CamScanner

1. ज्ञान एवं अनुभव (Knowledge and Experiences)

शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य हैं जिनमें से प्रमुख हैं—व्यावसायिक, ज्ञान, चरित्र, सांस्कृतिक एवं सर्वांगीण विकास सम्बन्धी उद्देश्य। इन्हीं उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा की विषय सामग्री में शामिल किया जाता है—

(क) सामाजिक विज्ञान—इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, साहित्य एवं धर्म।

(ख) भौतिक या प्राकृतिक विज्ञान—भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, आदि।

(ग) व्यावसायिक क्षेत्र—

(i) औषधि विज्ञान
(ii) कृषि
(iii) इंजीनियरिंग
(iv) अध्यापक प्रशिक्षण
(v) कला
(vi) संगीत
(vii) पेंटिंग आदि।

(घ) विविध—भाषाएँ, गणित, सामयिक घटनाएँ आदि।

(ङ) क्रियाएँ एवं अनुभव—खेल, नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, फोटोग्राफी, पत्र-मित्रता, समाज सेवा, राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन, मेले व त्यौहारों का आयोजन, भ्रमण, देशाटन, टिकट-संग्रह, वाद-विवाद व मनोरंजन क्रियाएँ।

2. विधियाँ एवं तकनीकें (Methods and Techniques)

इसके अन्तर्गत शिक्षा में निम्नलिखित शामिल हैं—

(i) शिक्षा का दर्शन (Philosophy of Education)—शिक्षा के दर्शन के आधार पर ही हमें शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों आदि की जानकारी प्राप्त होती है। यह दर्शन ही है जिसने मानव की क्रियाओं की व्याख्या की है। इसी के आधार पर हम यह निश्चित करते हैं कि क्या पढ़ाया जाना है तथा किसका अधिगम प्राप्त करना है ?

(ii) शिक्षा का समाजशास्त्र (Sociology of Education)—हम सभी जानते हैं कि मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है तथा समाज से ही उसका व्यवहार प्रभावित होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास इन्हीं प्रभावों के अन्तर्गत आता है। यह सब किस प्रकार का होता है ? इसका ज्ञान हमें समाजशास्त्र से प्राप्त होता है। शिक्षा की प्रक्रिया समाज के हाथों में रहती है। जार्ज पेन ने समाजशास्त्र के सिद्धान्तों एवं प्रदत्तों के आधार पर शिक्षा की समस्याओं का समाधान करना चाहा। उनके अनुसार सामाजिक अन्त:क्रिया को जाने बिना शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करना कठिन होगा। शिक्षा सामाजिक नियन्त्रण का सशक्त साधन है, अत: सामाजिक सम्बन्धों का ज्ञान आवश्यक हो जाता है।

(iii) शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)—आधुनिक शिक्षा बाल-केन्द्रित शिक्षा है। शिक्षा की नीतियाँ, विषय सामग्री आदि का निर्माण करते समय बालक की

ET, History of Edu, Edu problems
Edu. Administration & Org, Comparative Edu

Scanned with CamScanner

रुचियों, अभिवृत्तियों, अभिरुचियों को ध्यान में रखा जाता है। शैक्षिक मनोविज्ञान ही बालक को समझने में अर्थात् उसकी रुचियों, आदतों, योग्यताओं व स्वभाव को जानने में सहायता करता है।

(iv) मूल्यांकन (Evaluation)—शिक्षा द्वारा ही मूल्यांकन का अर्थ स्पष्ट किया जाता है तथा इसके सिद्धान्त की जानकारी दी जाती है। मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों द्वारा बालक की उपलब्धि, मनोवृत्ति, रुचियों, ज्ञान, व्यक्तित्व आदि का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन की विधियों से बालक के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पक्षों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया जाता है।

(v) पाठ्यक्रम (Curriculum)—शिक्षा के अन्तर्गत पाठ्यक्रम के अर्थ को विस्तृत अर्थों में लिया जाता है जिसमें विषय सामग्री के साथ-साथ क्रियाएँ भी शामिल होती हैं। पाठ्यक्रम के सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है जिनके आधार पर प्रत्येक कक्षा के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है जो बालक की मानसिक परिपक्वता तथा रुचियों पर आधारित होता है। पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रकारों की जानकारी दी जाती है।

(vi) शिक्षा प्रशासन तथा प्रबन्धन (Educational Administration and Management)—शिक्षा प्रशासन तथा प्रबन्धन के अन्तर्गत हम शिक्षा में राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार का योगदान, स्कूल किस प्रकार बनाए जाएँ, उनमें सामान का प्रबन्ध किस प्रकार किया जाए, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संगठन किस प्रकार किया जाए, विद्यार्थियों का चयन किस प्रकार किया जाए, उनका मूल्यांकन कैसे हो, रिकार्ड कैसे रखे जाएँ, अध्यापकों को कार्यभार किस प्रकार प्रदान किया जाए आदि विषयों का अध्ययन करते हैं।

(vii) शैक्षिक तकनीकी (Educational Technology)—शैक्षिक तकनीकी के अन्तर्गत विभिन्न शिक्षण विधियों, शिक्षण सामग्री, शिक्षण प्रतिमान, सूक्ष्म शिक्षण, अन्तःक्रिया शैली आदि का अध्ययन किया जाता है। शिक्षण व सीखना दोनों ही शिक्षा प्रक्रिया में शामिल होते हैं। अधिगम क्या है, अधिगम में प्रभावशाली कारक कौन से हैं तथा अधिगम को प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है, इसका भी अध्ययन किया जाता है।

(viii) पाठ्य-पुस्तकें (Text-books)—पाठ्य-पुस्तकों का भी शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्य-पुस्तकें किस प्रकार की होनी चाहिए, एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक में क्या-क्या गुण होने चाहिए, आयु के अनुसार पाठ्य-पुस्तकें कैसी होनी चाहिए, इनका अध्ययन किया जाता है। पाठ्य-पुस्तकें किसी धर्म से प्रेरित नहीं होनी चाहिए।

संक्षेप में शिक्षा में ज्ञान एवं अनुभव के क्षेत्र तथा शिक्षा की प्रक्रिया की विधियाँ एवं तकनीकें दोनों ही शामिल होती हैं। शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। एक व्यक्ति शिक्षा के हर क्षेत्र में निपुण नहीं हो सकता। शिक्षा की कोई सीमा नहीं है। बहुत कुछ प्राप्त किया जा चुका है परन्तु इससे आगे भी अनुसंधान प्रक्रिया चल रही है। ज्ञान का कोई अन्त नहीं है। मनुष्य कभी भी सन्तुष्ट नहीं होता। फिर भी जीवन के लिए एकीकृत वृद्धि एवं कुशलता की विचारधारा के अनुरूप कमतर शिक्षा भी व्यक्ति से व्यक्ति के लिए भिन्न होगी। जीवन के साथ-साथ शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य भी, क्योंकि शिक्षा भी जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, यह है 'अच्छा, फिर भी और अच्छा ! उच्च, फिर भी और ऊँचा' (Better, still more better ! Higher, still more higher)। शिक्षा के सभी क्षेत्र एक-दूसरे से परस्पर सम्बन्धित हैं।

Scanned with CamScanner